Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

हिन्दी शिक्षण में कविता शिक्षण का स्वरुप

डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायकाचार्य,शिक्षाशास्त्रविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानितविश्वविद्यालय),नई दिल्ली

शोध-सारांश (Research-Abstract) हिन्दी शिक्षण के अन्तर्गत अनेक विधाएँ है प्रत्येक विधा की पठन- पाठन की शैली अलग अलग अलग है। प्रस्तुत शोध लेख में कविता शिक्षण के लिए कौन-कौन से स्मरणीय बिन्दू है जिनको ध्यान में रखकर अध्ययन किया जा सके एवं कराया जा सकें। प्रस्तुत लेख में भूमिका, कविता शिक्षण की शिक्षण परिभाषा, कविता शिक्षण का महत्त्व, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चमाध्यमिक स्तरानुसार,कविता शिक्षण के उद्देश्य, कविता शिक्षण की विधियों को प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द – हिन्दी, शिक्षण, विधा, पाठक, भाषा, साहित्य, शिक्षण,कविता, शैली

भूमिका– काव्य के प्रमुखतया दो रुप माने जाते हैं- गद्यकाव्य एवं पद्यकाव्य। पद्य काव्य भव प्रधान होता है। इसके अन्तर्गत भावना, कल्पना तथा बुद्धि तीनों पक्षों का समावेश होता है। सामान्य रुप से जो रचना छंदोबद्ध होती है उसे कविता कहा जाता है इसमें गति, यति लय आदि का ध्यान रखा जाता है। परन्तु आज की नई कविता में छंद या लय का ध्यान नहीं रखा जाता। अर्थात् कविता छंदोबद्ध भी हो जाती है और छंद रहित भी प्रत्येक पद्य रचना कविता हो सकती है परन्तु प्रत्येक कविता पद्य हो , यह आवश्यक नहीं। मनुष्य की वाणी जो शब्द- विधान करती है वही कविता है। कविता का आरम्भ वीरगाथा काल से माना जाता है।

संस्कृत मे सामान्यतः कवि के कर्म को ही काव्य कहा जाता है। अंग्रेजी में कविता के लिए Poetry शब्द का प्रयोग होता हे। इसका सीधा सम्बन्ध Poet के साथ है Poet शब्द का अर्थ निर्माता सर्जन है और (Poetry) उसका निर्माण या सर्जन है। भारतीय आचार्यों ने काव्य की परिभाषा करते समय मुख्यतः उसकी आत्मा का ध्यान रखा है, जबकि पाश्चात्य आचार्यो ने उसके भाव, कल्पना,बुद्धि, शैली आदि तत्त्वों का ध्यानरखकर उसकी परिभाषाएँ गठित की हैं जो इस प्रकार हैं-

कविता शिक्षण की प्रसिद्ध परिभाषाएँ

1. **अग्निपुराण-** संक्षेपाद्ववाक्यमिष्टार्थ पदावली ।अर्थात इष्ट अर्थ को प्रकट करने वाली पदावली से युक्त वाक्य ही काव्य है।
2. **आचार्य भामह-** शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्। अर्थात् शब्दार्थ का संयोग काव्य है।
3. **कविराज विश्वनाथ-** वाक्यम् रसात्मक काव्यम् । अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है ।
4. **आचार्य वामन**- रीतिरात्मा काव्यस्य। अर्थात् रीति ही काव्य की आत्मा है ।
5. **पण्डितराज जगन्नाथ**- रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् । रमणीय-मनोहर अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य होता है।
6. **एनसाईक्लोपीडीया ब्रिटेनिका** Poetry Art, work of the poet अर्थात् काव्य कवि का कलात्मक कार्य हैं।
7. **मिल्टन(Milton)-** Poetry should be simple, serious and impassioned अर्थात कविता सादा प्रत्यक्षमूलक और रागात्मक अभिव्यक्ति है।
8. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल-** हृदय की मुक्तावस्था के लिए किया हुआ शब्द विधान ही काव्य है। अर्थात् जब मनुष्य प्रकृति के विविध रुपों और व्यापारों से ऊँचा उठकर अपने योग-क्षेम, हानि-लाभ,सुखदुख आदि को भलकर अपनी पृथक सत्ता से छूटकर केवल अनुभूति मात्र रह जाता है, तब हम उसे मुक्त हृदय की इस मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है ,उसे कविता कहते हैं।
9. **सुमित्रानन्द पंत** – कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।
10. **जयशंकर प्रसाद**- आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति काव्य है।
11. **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी-** साहित्य का कारोबार ममुष्य के समूचे जीवन को लेकर है । सर्वभूत का अत्यधिक कल्याण साहित्य का चरम लक्ष्य है । जो साहित्य केवल कल्पना- विलास है , जो केवल समय काटने के लिए लिखा जाता हे वह बड़ी चीज नहीं है।

कविता शिक्षण का महत्त्व

मानव जीवन में रस का अत्यधिक महत्त्व है । मनुष्य रस से ही आनन्दानुभूति प्राप्त करता है और प्रसन्नता का अनुभव करता है । इस रस की अनुभूति आदि काल से ही कभी लोक गीतों के द्वारा तो कभी आलाओं, कभी पद्यों या कभी कविताओं के माध्यम से की जाती है । संस्कृत साहित्य के अनुसार माना जाता है कि कविता की धारा आरम्भ में दुखी हृदय से निकलती है । कविता उसे भावना से ऊँचा उठाकर वहाँ ले जाती है जहाँ आनन्द ही आनन्द है । इसीलिए क्रौञ्च पक्षी के जोड़े में से शिकारी द्वारा एक का वध कर दिया गया , तब व्याकुल हृदय युक्त बाल्मीकि जी के मुख से ये शब्द सहसा मुखरित हुए-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।

यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीकाममोहितम् ।।

और तभी से कविता का प्रारम्भ माना जाता है । जब व्यक्ति अत्यन्त दुख में होता है तब कुछ गुन गुनाता है और जब अत्यन्त प्रसन्न होता है तब भी गुन गुनाता है । उत्सवों , त्यौहारों विवाहों में गीतों द्वारा ही वातावरण को प्रफुल्लित बनाया जाता है । कविता मानव को रसमग्न कर आनन्द से भर देती है । कविता पाठ मानव को भौतिक स्तर से ऊपर उठाकर आध्यात्मिक स्तर पर पहुँचा देता है । कविता का सम्बन्ध सीधा मानव हृदय से होता है । इसीलिए कहा जाता है शक्ति कलम में नहीं अपितु तलवार में होती है । चूँकि कविता में विवेक के साथ कल्पना का प्रयोग होता है । इसलिए कहा जाता है- **जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि** अर्थात कविता सत्य और आनन्द एकीकरण की कला है जो कवि द्वारा संगीतमय विचारों से संजोयी जाती है । कविता वह साधन है जिसकी सहायता सेशेष सृष्टि के साथ रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा तथा निर्वाह होता है ।

प्राथमिक स्तर पर भी कविता का महत्त्व अत्यधिक है । छोटे-छोटे बच्चों में कविता ही सौन्दर्यानुभूति एवं रसानुभूति की भावना को विकसित कर उनमें रागात्मकता का संचार करती है । बच्चों की कल्पना को विकसित कर उनमे रागात्मकता का संचार करती है । बच्चों की कल्पना शक्ति को विकसित करती है । एवं बच्चों में सात्विक भाव जाग्रत कर उन्हें मानव- कल्याण के लिए प्रेरित करती है ।

छात्र विकास की दृष्टि से स्तरानुसार कविताएँ शिक्षण का विभाजन कर सकते हैं ।

1. **प्रथमिक स्तर**-इस स्तर पर बालगीत उपयुक्त होते है क्योंकि बाल- गीतों मे छोटे-छोटे वाक्य होते हैं । अतः बच्चे इन्हें जल्दी याद कर लेते हैं और बार- बार सुनते एवं सुनाने की चेष्टा करते हैं इस स्तर पर प्रयाशः खड़ी बोली की कविता ओं को चुनने पर बल दिया जाता है ,जिसकी भाषा एवं शब्द अत्यन्त सरल एवं भाव भी सरल हो । छन्दोंबद्ध लययुक्त गेय पद वाली कविताओं के साथ-साथ तुकान्त पद वाली कविताएँ इस स्तर के लिए अनुकूल होती हैं क्योकि छात्रों को आसानी से कण्ठस्थ हो जाता है ।
2. **माध्यमिक स्तर-** इस स्तर पर कविता की भाषा बालगीतों की अपेक्षा थोड़ीं से प्रौढ़ हो जाती है । भाव एवं विचारों के साथ- साथ शैली प्रधान कविताएँ इस स्तर पर पढाई जाती हैं । इतिवृत्यात्मक कविताएँ इस स्तर के लिए सरला पूर्वक ग्राह्य सिद्ध होती है । नीती के दोहे भी बालकों को इस स्तर पर याद कराए जाते हैं । इस स्तर पर अवधी एवं ब्रज भाषा की भी सरल कविताएँ पढाई जा सकती हैं ।
3. **उच्चस्तर-** उच्च स्तर पर भावात्मक एवं साहित्यक तथा सौन्दर्य प्रधान कविताएँ पढाई जाती है। इनका विषय गम्भीर, भाषा शैली मौलिक, चिन्तन एवं नवीन होती है । अलंकार युक्त, गूढ़ भावों वाली तथा प्रतीकात्मक योजना वाली कविताएँ भी पढाई जाती हैं। चित्रात्मक ,मूर्त विधान मानवीकरण, कल्पना, नवीन उपमा , दृश्य-चित्र वाली कविताओं का समावेश भी इसी स्तर पर किया जाता है ।

कविता शिक्षण के उद्देश्य-

कविता शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य जीवन के अनुभनों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। यह पाठक की भावनाओं का उदातीकरण भी करती है और सौन्दर्यबोध का परिष्कार भी। कविता रागमय होती है, उसमें हृदय को स्पन्दित करने की शक्ति होती है, चित्तवृतियों का परिमार्जन होता है। कविता शिक्षण उद्देश्य निम्नलिखित है -

1. कविता के द्वारा कक्षा में आनन्द का वातावरण पैदा करना।
2. छात्रों को उचित गति यति लय हाव भाव पुरस्सर कविता पाठ करने के योग्य बनाना।
3. छात्रों में अभिनय पूर्वक कविता गाने की कला विकसित करना।
4. छात्रों में कविता के प्रति रुचि पैदा करना।
5. छात्रों को कविता के माध्यम से अभिव्यक्त प्राकृतिक सौन्दर्य ऐतिहासिक घटनाओं , पौराणिक कथानकों सांस्कृतिक मूल्यों धार्मिक विश्वासों और सामाजिक दशाओं आदि की अनुभूति एवं ज्ञान कराना।
6. छात्रों को कविता पाठ सुनाकर उसका अर्थ ग्रहण करने एवं भावानुभूति करने के योग्य बनाना।
7. छात्रों को स्वर प्रवाह तथा भावों के अनुसार कविता पाठ करने के योग्य बनाना।
8. छात्रों को शब्द योजना, शब्द शक्तियों छन्दों , अलंकारों, रसों आदि काव्य तत्त्वों का ज्ञान कराना।
9. छात्रों में कविता पाठ सुनाकर उसका अर्थ ग्रहण करने एवं भावानुभूति करने के योग्य बनाना।
10. छात्रों में कवि की अनुभूतियों तथा कल्पनाओं को समक्षने तथा ग्रहण करने की शक्ति उत्पन्न करना।
11. छात्रों की कल्पना शक्ति में बुद्धि करना।
12. छात्रों को पढ़ी हुई कविता को पढकर उसके भावों को अपने शब्दो में कहने की योग्यता विकसित करना।
13. छात्रों में सृजनात्मक शक्ति का विकास करना।
14. छात्रों में कविता की समीक्षा करने की योग्यता विकसित करना।
15. छात्रों की चित्त वृत्तियों का परिमार्जन कर उनमें उच्च आदर्शों का निर्माण कराना।
16. छात्रों में सामाजिक आदर्शानुकूल आचारण करने की अभिवृत्ति विकसित करना।
17. छात्रों को कविता के माध्यम से मानव- जीवन के विवध पक्षों का ज्ञान कराना।
18. छात्रों को कविता को रंगमंच के माध्यम से प्रस्तुत करने के योग्य बनाना।
19. छात्रों को कविता को रंगमंच के माध्यम से प्रस्तुत करने का सामर्थ्य उत्पन्न करना।

कविता शिक्षण की विधियाँ

प्रत्येक कविता को एक ही विधि से पढाना असंभव है। कविता में वर्णित विषय व कविता किस स्तर से पढ़ानी है, ये निश्चय करते हुए कविता शिक्षण के लिए रोचक विधि को चुना जाता है। कविता शिक्षण की अनेक विधियाँ हैं-

1. गीत विधि
2. अभिनय विधि
3. अर्थबोध या शब्दार्थ कथन विधि
4. व्याख्या विधि
5. प्रश्नोत्तर या खण्डानवय विधि
6. व्यास विधि
7. तुलना विधि
8. समीक्षा विधि
9. विश्लेषण विधि

1. **गीतविधि-** प्राथमिक स्तर के लिए यह विधि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं मनोवैज्ञानिक है । इसमे पहले अध्यापक ताल, लय, एवं स्वर के साथ स्वयं बालगीत का पठन करता है । इसके बाद बच्चों को अध्यापक का अनुकरण करने के लिए कहा जाता है। इसके बाद छात्र और अध्यापक मिलकर ताल एवं लय के साथ गाते हैं । बच्चों को इस विधि से पढने में बहुत आनन्द आता है क्योंकि वे खेल-खेल में इन गीतों को कठस्थ कर लेते हैं और बार-बार गुन-गुनाकर आनन्द का अनुभव करते हैं। इनमें प्रायः सरल तुकबन्दियाँ होती है और इस विधि में बच्चों के जीवन से सम्बन्धित बालगीतों का चयन किया जाता है । उदाहरण के लिए इस प्रकार की कविताएँ ली जा सकती हैं-

   लकड़ी की काठी का, काठी का घोड़ा

   घोड़े की दुम पर , जो मारा हथौड़ा।

   दौड़ा दौड़ा दौड़ा

   घोड़ा दुम हिला के दौड़ा ।

2. **अभिनय विधि-** प्रारम्भिक स्तर पर कई गीत ऐसे पढने होते हैं जिनमें क्रियात्मकता अदिक होती है। ऐसे गीतों को अभिनय विधि से पढाया जाता है । कविता या बालगीत में वर्णित विषय के अनुसार अंग संचालन कराते हुए वाचन कराया जाता है। अंग संचालन के साथ-साथ भाव-प्रदर्शन के लिए उचित भाव भंगिमा का प्रयोग कराया जाता है। प्राथमिक स्तर पर पहले अध्यापक अभिनय के साथ कविता को पढता है उसके बाद छात्र अध्यापक का अनुकरण करते हुए उसी करह का अभिनय करते हुए इस कविता या बालगीत को गाते हैं । यदि कविता में अनेक पात्र हैं तो बच्चे अलग- अलग पात्र की भूमका निभाते हुए उस कविता को पढ़ते है । इस विधि से कक्षा में सजीव एवं सरस वातावरण बन जाता है कुछ कविताओं को सामूहित अभिनय द्वारा भी पढाया जाता है ।

   जैसे- आओ मनायें स्वाधीनता दिवस, झण्डा फहरायेंगे।

   सपने करेंगे साकार अपनी माँ के, नई क्रान्ति लायेंगे।।

   इस बालगीत में सभी छात्र अपने दोनों हाथों को उठाकर चारों तरफ फैलाते हुए झण्डा फहराने का अभिनय करते हैं । फिर मातृभूमि की तरफ इशारा करते हुए अभिनय करते हैं । और अपने वक्षस्थल को तानते हुए हाथ को मजबूती से आगे बढाते हुए क्रान्ति

का अभिनय करते हैं ।इस प्रकार अभिनय के साथ गीत गाते हुए बच्चों में उत्साह बढंता है और प्रसन्नता की लहर बच्चों के मुख पर नजर आती है।

3. **अर्थबोध या शब्दार्थ कथन विधि** – यह विधि परम्परागत मानी जाती है । इसमे अध्यापक पहले तो स्वयं कविता को पढता है या छात्रों द्वारा ही उसका वाचन करवा लेता है फिर कविता की एक- एक पंक्ति को पढाते हुए उसमें आए कठिन शब्दों का अर्थ बताकर पूरी पंक्ति का सरल गद्यानुवाद कर देता है । उदाहरण के लिए माखनलाल चतुर्वेदी जी कविता को यहां प्रस्तुत किया जाता है ।

माला टूटी तो मनका विखर जायेगा

कुछ इधर जायेगा कुछ उधर जायेगा

क्यारियों ! वन से द्रोह करके तुम्हे मिलेगा क्या

जल पवन को तरस जाओगी

नाव वह जायेगी , मेढ़ ढह जायेगी

बस सूखी क्यारी ही रह जायेगी ।

इस प्रकार प्रत्येत पंक्ति का अर्थ बताते हुए अधायापक उसका शिक्षण करता है । इसमें छात्र निष्क्रिय श्रोता के रुप में बैठकर सुनते हैं और कक्षा शिक्षण नीरस प्रतीत होता है ।

4. **व्याख्या विधि-** इस विधि में कविता में सन्निहित सभी तथ्यों की चर्चा की जाती है । अर्थात् शब्दार्थ से लेकर भावार्थ तक , कविता से लेकर कवि तक सभी काव्यशास्त्रीय तत्वों की व्याख्या की जाती है। सर्वप्रथम अध्यापक कविता का सस्वर वाचन करता है । फिर प्रयेक पंक्ति का शब्दार्थ बतलाता है, उसके बाद कविता में निष्ठ मनोगत भावों का विश्लेषण करता है। अन्य समकक्ष कविता के साथ उस कविता की तुलना कर उसका भावार्थ समझाने का प्रयास करता है। तदुपरान्त कविता में निष्ठ छन्द- अलंकार-रस आदि से छात्रों का परिचय कराता है, यदि समय अध्यापक के पास अधिक है तो छन्दादि का लक्षण भी समझाने का प्रयास करता है । जिस रचयिता के द्वारा कविता रची गई है । उसका जीवन परिचय अर्थात सम्पूर्ण नाम , गोत्र , जन्मस्थान , उसकी रचनाएँ आदि से छात्रों का परिचय कराता है । । दोहा पढाने के लिए यह विधि उपयुक्त है । इस विधि के द्वारा ही दोहों की सप्रसंग व्याव्या की जाती है।

5. **प्रश्नोत्तर या खण्डान्वय विधि-** कविता की एक एक पंक्ति एवं उसके एक एक खण्ड पर प्रश्न पूछते हुए, बालकों से उत्तर प्राप्त करते हुए और यथावश्यक स्वयं स्पष्ट करते हुए कविता का अर्थ बताने की विधि प्रश्नोत्तर अथवा खण्डान्वय प्रणाली कहलाती है। इसमें सर्व प्रथम अध्यापक स्वंय या छात्रों से कविता का सस्वर पाठ करवाता है । तत्पश्चात सम्पूर्ण कविता को छोटे -छोटे क्रमिक खण्डों में विभाजित कर लिया जाता है । हर खण्ड पर एक या अधिक प्रश्नो का निर्माण किया जाता है। अध्यापक इन अंशो से सम्बन्धित प्रश्न छात्रों से पूछता है और छात्र उन प्रश्नों का उत्तर देते हैं । इन उत्तरों के माध्यम से अध्यापक कविता के भावों को स्पष्ट कर देता है । छात्रों के द्वारा अपेक्षित उत्तर न निलने पर अध्यापक कविता के भावों को स्पष्ट कर देता है तथा स्वयं कविता के अर्थ को स्पष्ट कर देता है । इस विधि ज्ञानात्मक दृष्टि से उपयुक्त है ।

उदाहरणार्थ

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।

पंछी को छाया नहीं , फल लागे अति दूर।। (कबीर दास)

इस दोहें को पढ़ाने के लिए निम्न प्रश्नों का निर्माण किया जा सकता है-

1. खजूर का पेड़ कैसा होता है ?
2. यह किसको छाया नहीं देता है ?
3. इसके फल कहाँ लगते है?
4. फलों को हम क्यों नहीं तोड़ सकते है ?
5. पंछी शब्द का अर्थ क्या है ?
6. आदमी को कैसा होना चाहिए?

यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक मानी जाती है । प्रनोत्तर के माध्यम से कविता – शिक्षण होने के कारण छात्रों को बराबर सक्रिय रहना पड़ता है। कक्षा जीवन्त रहती है । छात्रों को भावानुभूति एवं रसानुभूति से सहायता मिलती है ।

6. **व्यास विधि-** यह विधि उच्च कक्षाओं में कविता- शिक्षण के लिए उपयोगी है। इसमें अध्यापक कविता पढाते समय उसी पद्धति का अनुकरण करता है जिसे कथावाचक व्यास गद्दी पर वैठकर कथा कहने के लिए अपनाते हैं । दूसरे शब्दों में , इसमें हर दृष्टि से कविता का व्यास अर्थात् विस्तार किया जाता है । इस विधि में जिस प्रकार कथावाचक कथा के एक- एक भाव को स्पष्ट करने के लिए अनेक उदाहरण व दृष्टान्त देते हैं , एक- एक शब्द के गूढ़ अर्थ को समझाने का प्रयास करते हैं , इसी प्रकार इस विधि में अध्यापक कविता के अर्थ एवं भाव को स्पष्ट करने के लिए उसमें छिपी पौराणिक ऐतिहासिक आदि की सप्रसंग व्याख्या करता है । इसके सफल प्रयोग के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक कविता पढ़ाते समय बीच बीच में छात्रों का सक्रिय सहयोग लेते रहना चाहिए ।
7. **तुलना विधि-** इस विधि द्वारा कविता शिक्षण में शिक्षक प्रस्तुत कविता के समान भाव वाली , उसी कवि द्वारा अथवा अन्य कवि द्वारा रचित कविताएँ छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करता है । इस विधि के द्वारा छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास होता है । तुलना उसी भाषा की कविता के साथ या अन्य भाषाओं की समानार्थक, विपरीतार्थक कविताओं के साथ भी कर सकते हैं कविता में तुलना विधि का प्रयोग चार विधियों से किया जा सकता है ।
    1. समभाषा कविता तुलना प्राणाली ।
    2. भिन्न भाषा कविता तुलना प्रणाली ।
    3. भाव तुलना प्रणाली ।
8. **समीक्षा विधि-** यह विधि उच्च स्तरीय है । इसकी समीक्षात्मक व्याख्या की जाती है अर्थात कविता का भावपक्ष एवं कलापक्ष दोनों के दृष्टिकोण से आलोचनात्मक विवेचना की जाती है। इसमें छात्रों पर कार्यभार अधिक रहता है । कभी- कभी भाषा की समीक्षा की जाती

है। कभी- कभी काव्यगत भाव की समीक्षा की जाती है। कभी- कभी कवि की कविता से मिलने वाली शिक्षा की समीक्षा की जाती है। कविता लिखने के निर्धारित सिद्धान्तो में से कितने सिद्धान्तों पर कविता खरी है इसकी समीक्षा की जाती है, कविता शीर्षकानुकूल है। या नहीं इस बात की समीक्षा की जाती है।

9. **विश्लेषण विधि**-इस विधि में कविता के प्रत्येक अंश का विश्लषण कर उस पर चर्चा की जाती है। यह भाषा पक्ष पर आधारित है। भाव इसमें गौण हो जाते हैं इस विधि मे छात्र रसानुभूति के पूर्ण आनन्द से वंचित रह जाते हैं। कविता शिक्षण में विधि अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

उपसंहार- प्रस्तुत शोध लेख में कविता शिक्षण क्या है ? प्रस्तुत लेख में पढ़ने और पढ़ाने की प्रक्रिया से अवगत कराया है जो कि कविता शिक्षण के ज्ञान को क्रमबद्ध आत्मसात करने के लिए आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डा. सुनील कुमार शर्मा, **हिन्दी शिक्षण ,** शिवालिक प्रकाशन , नई-दिल्ली।
2. डा. शिखा चतुर्वेदी, **हिन्दी शिक्षण**,आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. निरंजनकुमार सिंह, **माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दीशिक्षण,** राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. डा. जयनारायण कौशिक**, हिन्दी शिक्षण**,हरियाणा संस्कृत अकादमी, चण्डीगढ।
5. डा. जयदेव डबास, **हिन्दी भाषा शिक्षा**, दोहा हाउस ,नई दिल्ली।
6. डा.रमण बिहारी, **हिन्दी शिक्षण**,आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
7. मधुनरुला, **हिन्दी शिक्षण ,** ट्वेन्टी फर्स्ट सेन्चुरी , पटियाला , पंजाप
8. https://hi.wikipedia.org
9. https://www.hindikiduniya.com/essay/education-essay-in-hindi/
10. https://www.scotbuzz.org/2019/03/gady-shikshan.html
11. https://www.hindivibhag.com